UNIVERSAL
LIBRARY
OU_182959
UNIVERSAL
LIBRARY

Osmania University Library
H81
C43S
Accession No. G.H 6016
घजजूराम
श्रीकृष्णोदय . n.d.
hould be returned on or before the date last marked below

राम चरित्र कृष्ण की महिमा,
नर-नारी जो गायेगा।
'छज्जूरामा' निश्चय मुझको,
भवसागर तर जायेगा॥

भक्तवत्सल-दीनबन्धु-करुणासिन्धु
श्रीकृष्णार्पण

पाठकों से

जय श्रीकृष्ण !

पूज्यपाद पंडित जी लिखित पुस्तकों का **आठवां पुष्प—"श्रीकृष्णोदय"** कृष्ण-भक्तों की सेवा में पेश करते हुए हमें अपार आनन्द अनुभव हो रहा है ।

उनकी इच्छा अनुसार ही यथाशक्ति हम ये प्रकाशन धर्म-प्रेमी सज्जनों को पेश करके सच्चिदानन्द भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि वे सभी प्राणियों को अपनी भक्ति दान दें तथा उनके जीवन को सन्मार्ग पर चलाने की सद्बुद्धि एवं सद्प्रेरणा प्रदान करें। इन ज्योति-स्तम्भों से किसी एक का भी जीवन सफल हो, यह हमारे लिए गौरव की बात होगी।

इस सत्साहित्य के भव्य तथा यथासमय प्रकाशन में वस्तुतः **श्री सुदर्शन जी पराशर** तथा वी०वी०आर०आई० प्रैस के मैनेजर—**श्री शंकरदास जी चड्ढा, श्री रमेश** व **श्री पूर्णचंद जी परदेसी** एवं अन्य कर्त्तव्यनिष्ठ कर्मिष्ठों का मार्गदर्शन तथा अनथक सहयोग ही प्रशंसा के पात्र हैं, जिस के लिए हम उनके हार्दिक धन्यवादी और आभारी हैं।

पाठकों से अनुरोध है कि वे प्रस्तुत पुस्तक ही नहीं अपितु पूज्य पंडित जी विरचित अन्य प्रकाशनों के विषय में भी अपने उद्‌गारों एवं विचारों से हमें अवगत करायेंगे ताकि आगामी संस्करणों में यथोचित शोध एवं परिवर्तन किया जा सके ।

धन्यवाद !

ANIA UNIVERSITY
HYD

विनीत :—

(डॉ०) श्यामसुन्दर शर्मा,

ट्रस्टी, पं० लज्जूराम मायावन्ती चैरीटेबल ट्रस्ट,

66, रेलवे मण्डी, होश्यारपुर—146 001 (पंजाब)

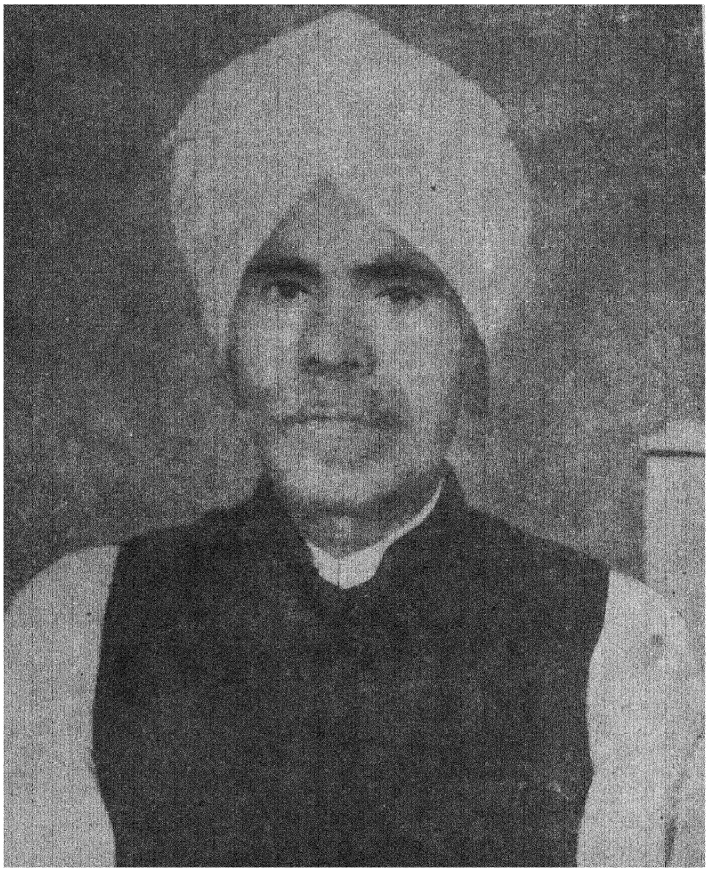

स्व० पण्डित छज्जूराम जी सामाने वाले

(सन् 1910—1979 ई०) सुपुत्र श्री सौंधाराम

लेखक का संक्षिप्त जीवन परिचय

देवभूमि भारत की पावन धरती पंजाब के जिला पटियाला के सामाना कस्बे में सन् 1910 ई० में पंडित सौंधाराम जी के घर में आपका जन्म हुआ। बचपन में ही इनके पूज्य माता जी की अकाल मृत्यु हो जाने से इनका पालन-पोषण अन्धी दादी जी की देख-रेख में हुआ। बचपन से ही आपका ध्यान ईश्वर-भक्ति की ओर था। पढ़ने-लिखने में आपकी बुद्धि बड़ी तीक्ष्ण थी। सोलह वर्ष की आयु तक पहुँचते आपने दसवीं की परीक्षा पास कर ली।

सत्य वादन आपके जीवन का आधार था। सच्च बोलने के इसी स्वभाव के कारण ही आप अपने दादा जी के चूने के भट्टे पर भी काम नहीं कर सके। व्यापार में झूठ का सहारा लेना आप अच्छा नहीं समझते थे। एक बार जीविका की तलाश में अमृतसर जाते हुए इनकी भेंट एक अंग्रेज अफ़सर से हुई, जिसने इनके सद्गुणों को जान-भांप कर रेल-विभाग में नौकरी दिलवाने का पक्का वायदा किया; परन्तु स्वदेश-सेवा भावना की लगन के कारण इन्होंने अमृतसर में एक अखबार के प्रेस में ही अपने जीवन में सेवाकाल का शुभारम्भ किया। यहीं पर इन्हें कविता लिखने-करने के शौक की भी प्रेरणा मिली।

एक तो बचपन से ही कान में एक जहरीला कीट-पतंगा घुस जाने से हुए नुकसान के कारण आपको कुछ ऊंचा सुनाई देता था, दूसरे पहली धर्मपत्नी और बच्चे की अकाल मृत्यु से आपको बहुत ही दुःख हुआ जिस कारण भवसागर को मोह-माया से आपको विरक्ति सी हो गई और आप प्रायः भगवद्भक्ति और चिन्तन में ही अपना समय बिताने लगे। भगवान् श्रीराम, श्रीकृष्ण और रामभक्त श्रीहनुमान जी की चर्चा, पूजा व स्तुति में आपको विशेष आनन्द आता था। एक बार जब आप भक्ति-पूजा में लीन थे, तो श्रीहनुमान जी ने वानर रूप में ध्यान में आकर आपसे कहा कि चिन्ता न करो, सब ठीक हो जाएगा। इसी प्रकार *"श्रीरामायण"* लिखते हुए आपको युगलजोड़ी सरकार राम-लक्ष्मण के साक्षात् दर्शन हुए एवं लिखने में आए व्यवधान में उनसे आगे बढ़ने का ज्ञान हुआ जो बाद में अयोध्या जी जाकर वैसा

ही देख-पाकर आप आत्मविभोर हो गए ; इस सबका विस्तृत वर्णन आपकी *"भजनावली"* में दिया गया है । कुछ समय बाद दूसरी शादी करके आप ईमानदारी से निर्वाह करते हुए और भक्ति और ईश-स्तुति में कविताएँ लिखने और सुनाने में अपना समय व्यतीत करने लगे ।

आप सभी को सदा भक्ति में मन लगाने और ईमानदारी से रहने का शुभ संदेश देते थे । आपने अपने सभी बच्चों को अच्छी शिक्षा-दीक्षा दी । बच्चों के बड़े पदों पर आसीन हो जाने पर भी आपके सादा जीवन और रहन-सहन में कोई अन्तर न आया । आप अपने परिवारजनों का बहुत ध्यान रखते थे । एक बार आपकी धर्मपत्नी (स्व० श्रीमती मायावन्ती जी) बीमार पड़ गईं । पंडित जी ने उनके स्वास्थ्य लाभ के लिए भगवान् से प्रार्थना की और वे ठीक-ठाक हो गईं । परन्तु सन् 1979 ई० में पंडित जी की मृत्यु के बाद उन्होंने भी शीघ्र ही अपने प्राण त्याग दिए, जिस कारण इन दोनों महान् पुण्यात्माओं की चतुर्थशी एक साथ मनानी पड़ी ।

पण्डित जी सब धर्मों का समान आदर करते थे । प्रत्येक पंचमी को आप गुरुद्वारा दुःख-निवारण (पटियाला) में नहाने और माथा टेकने जाते । आपने *"भगवद्गीता"* का पंजाबी में तथा *"श्रीसुखमणी साहिब"* का हिन्दी में अनुवाद किया । अपने अंतिम समय के दिनों में आप *"कुरान"* का हिन्दी-पंजाबी अनुवाद कर रहे थे ।

इनकी हार्दिक अभिलाषा थी कि इनकी लिखी सभी किताबें छपें और भक्तजनों तक पहुँचें । आपकी यह इच्छा पूर्ण रूप से आप के जीवनकाल में तो पूरी न हो सकी लेकिन आपके सुपुत्रों, परिवार के दूसरे सदस्यों, सम्बन्धियों एवं सहयोगी सज्जनों के सत्प्रयासों से यह सत-साहित्य जन-साधारण तक पहुँचाया जा रहा है ।

—डी० सी० भारद्वाज
ऐक्स चीफ़ एग्ज़ीक्यूटिव
अहमदाबाद इलैक्ट्रीसिटी कम्पनी

66 रेलवे मण्डी,
होश्यारपुर

स्व० श्रीमती मायावन्ती जी

सुपुत्री श्री शादीराम चनार्थल वाले

पूरबियां स्ट्रीट, मरहन्दी गेट, पटियाला

प्रस्तुत एवं अन्य सत् साहित्य-पुस्तकों तथा
धर्मग्रन्थों के लिए :—

निषेधाष्टक

पुस्तकें ही मनुष्य की [redacted]तरंग मित्र होती हैं अतः—

१. पुस्तकों को यूं ही मत रखें अपितु पानी, तेल, धूल आदि से बचाने के लिए किसी साफ़, सादे, स्वच्छ कपड़े में लपेट कर पूजा व किसी अन्य उच्च तथा उचित स्थान पर रखें।

२. बिना हाथ मुंह आदि धोए पुस्तकों को हाथ मत लगाएं।

३. लेटे हुए, आराम करते हुए, शोर-शराबे में अथवा यात्रा आदि करते समय पुस्तकों को मत पढ़ें।

४. पुस्तकों को छोटे अबोध बच्चों के हाथ में मत दें। वे इन्हें काट-फाड़कर फेंक देंगे अथवा गंदा करेंगे जो कि शास्त्रोक्त नहीं है।

५. पुस्तकों में से कोई भी पृष्ठ अथवा चित्र मत फाड़ें-निकालें।

६. पुस्तकों के ऊपर बैठना, गंदे एवं जूठे हाथ लगाना, पांव के नीचे लेना, भोजन करते समय अथवा मदिरा-धूम्रपान आदि करके व करते हुए इन्हें पढ़ना, बिस्तर पर पैताने अथवा सिरहाने रखना घोर अपराध है।

७. पढ़ते समय पन्ने पलटने के लिए हाथ व अंगुली को थूक मत लगाएं। इससे पुस्तक अपवित्र ही नहीं होती अपितु शीघ्र नष्ट भी होती है।

८. यदि आप स्वयं पढ़ चुके हों या पढ़ना, न चाहें तो इन्हें रद्दी में न फेंकें-बेचें बल्कि किसी सज्जन, विद्वान्, धर्मस्थान या पुस्तकालय में दान स्वरूप भेंट दे दें। इससे पुस्तक की सुरक्षा होगी, दूसरों का ज्ञान बढ़ेगा एवं आप यश-प्रशंसा के भागी होंगे।

यही सच्ची सरस्वती वन्दना है।

शुभ परिवार की ओर से ५१ "श्रीकृष्णोदय" दान

पं० चिरंजीलाल प्रेम ; पं० बृजलाल — शांति देवी
वेदप्रकाश शर्मा — सरला शर्मा —रिंकल, राजेश
डा० ओमप्रकाश शर्मा — डा० सुखदर्शन शर्मा
गीतांजलि शर्मा, रोहित शर्मा, परीक्षित शर्मा
डा० श्यामसुन्दर शर्मा — डा० प्रमिला शर्मा
सुनैना शर्मा, मोनिका शर्मा, प्रशांत शर्मा
सुरिन्द्रकुमार शर्मा — गोलकां शर्मा
मालती, मुकेश शर्मा, नीलम कुमारी
सुमन शंकर शर्मा — ममता, बावा
कमलेश कान्ता — बा० श्री सूरजभान मैहता
अनुराधा, आसू, बासू
बिमलादेवी — विजय शर्मा, प्रतिभा — शिन्नू
कमलादेवी — चिरंजीलाल बावा — मन्नू
सुमन शर्मा — नरेन्द्र — पांखुरी
रक्षा रानी — पिंकी

२५ "श्रीकृष्णोदय" दान (नाना परिवार)

नाना स्व० पं० शादीराम चनार्थल कलां, पटियाला
मामा स्वर्गवासी पूजनीय पं० राधाकृष्ण, जगन्नाथ
पं० अमरनाथ — मूर्तिदेवी

२१ "श्रीकृष्णोदय" दान

श्रीमती द्रौपदी देवी धर्मपत्नी पं० डी० सी० भारद्वाज
आश्रम रोड, अहमदाबाद

श्रीकृष्ण जन्म

(हिन्दी कविता)

धर्म प्रचार

राम कृष्ण का नाम पवित्र, हरी का नाम प्यारा है ।
नाम हरी से छज्जूरामा, हो कल्याण तुम्हारा है ।। १ ।।

राम चरित्र कृष्ण की महिमा, नर नारी जो गायेगा ।
छज्जूरामा निश्चय मुझको, भव सागर तर जायेगा ।। २ ।।

बाल जवानी वृद्ध अवस्था, फिर आना काल ज़रूरी है ।
छज्जूरामा तय्यारी रखना, अब आना हुक्म हज़ूरी है ।। ३ ।।

कोई बनाता मन्दिर कालिज, धर्मशाला बनवाता है ।
तीर्थ पैड़ी शिला के ऊपर, कोई नाम अपना लिखवाता है ।।४।।

जग में नाम स्थिर हो मेरा, यत्न अनेक बनाता है ।
छज्जूरामा ग़रीब बेचारा, पुस्तक कई रचाता है ।। ५ ।।

लख करोड़ां बड़ी कमाई, सब मिल गई धरती पानी हैं ।
भगवत्गीता मेरी रामायण, ये कृष्ण जन्म निशानी हैं ।। ६ ।।

रचनावां मेरी तुच्छ हैं बेशक, प्रेम हरी बड़याई है ।
मेहनत कीनी समां लगाया, यह भी नेक कमाई है ।। ७ ।।

कोई न कोई भगत प्रेमी, पुस्तक सुने सुनायेगा ।
छज्जूरामा नाम अमर हो, मेरी रचनां कोई छपायेगा ।। ८ ।।

करेंगे घृणा कई प्रेमी, कटाक्ष भी करें करायेंगे ।
छज्जूरामा हरी कथा से, जन्म सफल हो जायेंगे ।। ९ ।।

●●●

—: पुस्तकों का विवरण आखरी टाईटल पर देखिये :—

* श्री गणेशायनमः *

श्रीकृष्ण जन्म

कुछ याद है गोकुल मथुरा जी,
बेशक यह बात पुरानी है।
उस कृष्ण कन्हैया मोहन की,
क्या तुझको याद कहानी है?
गीता का जिस उपदेश दिया,
पुरुषोत्तम ब्रह्म ज्ञानी है।
अर्जुन का रथ जिस हांका था,
महायोद्धा वीर लासानी है॥
जिस द्रौपदी चीर बढ़ाये थे,
अधिराज अद्भुत दानी है।
उस कुंज बिहारी मोहन की,
कुछ तुझको कथा सुनानी है॥
वह कुंज बिहारी गोकुल का,
वह गिरवरधारी गोकुल का,
वह कृष्ण मुरारी गोकुल का,
तस्वीर जन्म दिखलानी है॥
विद्या में बेशक हीना मैं,
लेखक ना कवि ज्ञानी हूँ।
कुछ टूटे-फूटे शब्दों में,
उस कृष्ण की महिमा गानी है॥

* भगवान् कृष्ण का प्रसंग *

मथुरा में राजा कंस हुआ,
प्रजा को बड़ा सताया था।
इक राज की खातिर जालिम ने,
पिता अपना कैद कराया था॥
देवकी भैनां कंसराज ने,
बहुत-बहुत समझाया था।
ज्ञान की बात क्रोधित करती,
भैन से बैर बढ़ाया था॥
देवकी ब्याही वसुदेव से,
रथ में जब बिठलाई थी।
पुत्र देवकी कंस को मारे,
आकाश वाणी फिर आई थी।
केश से पकड़ देवकी भैना,
रथ से खेंच गिराई थी।
कत्ल करने की मन में ठानी,
नग्न कटार उठाई थी।
कांप गये हैं अंबर धरती,
मच गई राम दुहाई है।
भैन पे राजा वार करो ना,
इस में तेरी भलाई है

सब बालक तुझ को दे देंगे,
वसुदेव जी अर्ज़ सुनाई है।
पाप महां बली पापी मारे,
विजय धर्म ने पाई है॥

हाय, भैन भनोईया दोनों को,
फिर कैद में डाला दोनों को।
पंज-पंज बेड़ी पैरों में,
हथकड़ी लगाई हाथों में॥

सप्त कोठड़ी कमरे काले,
सप्त ही पहरु, सप्त ही ताले।
यम के दूत कटारां वाले,
पहरा सख्त लगाने वाले॥

बालक हो जो कंस मंगावे,
पटड़े से पटकाता है।
कितना दुःख है मात-पिता का,
पेश नहीं कुछ जाता है॥

बालक छः हैं कंस ने मारे,
ज़रा तरस न खाता है।
जिस तन लागे सो तन जाने,
ईश्वर धीर बंधाता है॥

वक्त पड़े पर हर कोई बदा,
हरी का नाम ध्याता है।
जितना पुरुष है दुखिया होता,
ईश्वर प्रेम बढ़ाता है॥
भगवन् को क्यों याद ना करता,
सुखिया जो नर नारी है।
दुःख में हर कोई राम जपे है,
उलटी रीत हमारी है॥
देवकी वसुदेव राम जपे हैं,
दोनों ही दुखियारे हैं।
धरती पे पड़ दण्डवत करते,
अति दुखिया दीन बेचारे हैं॥

* देवकी वासुदेव की स्तुति *

हे ईश्वर हे दया के सागर,
सब के पालनहारे हो।
मात-पिता बंधु हितकारो,
स्वामी सखा हमारे हो॥
नील वर्ण हे चार भुजी जो,
शंख चक्र के धारे हो।
सात दिवस नौ खण्ड के मालिक,
त्रिलोकी उजियारे हो॥

जगतपति हे विश्वपति जी,
जीव चराचर प्यारे हो।
लाख चौरासी जीव बनाये,
सब के ही रखवारे हो॥

जिस का जग में कोई न होवे,
भगवन आप सहारे हो।
दुःख भंजन अलख निरंजन हो,
मेरे दुःख के जानन हारे हो॥

दीन दुःखी निर्धन के रक्षक,
संकट काटन हारे हो।
जिस-जिस नाम ध्याया तेरा,
जुग-जुग आन पधारे हो॥

पापी हैं हम दुष्ट अधर्मी,
तुम ईश्वर बख्शन हारे हो।
भगत भी तेरे दुष्ट भी तेरे,
करुणा के भंडारे हो॥

सर्व शक्तिवान बेअंत प्रभु जी,
तीन लोक के स्वामी हो।
तेरे बिना न कोई हमारा,
भगवन अन्तरयामी हो॥

दोषी हैं हम नीच कुकर्मी,
बेशक पापी भारी हैं।
शरण पड़े की लज्जया राखो,
हम आये शरण तुम्हारी हैं॥

गज और ग्राह लड़े जल भीतर,
गज ने तुझे ध्याया था।
सागर में जा ग्राह को मारा,
गज को आन छुड़ाया था॥

कच्चे घड़े में बिल्ली बच्चे,
घड़ा आवे बीच टिकाया था।
सात दिवस घड़ा अग्नी अन्दर,
तेरी लीला उन्हें बचाया था॥

प्रहलाद भगत ने नाम ध्याया,
पिता ने बहुत हटाया था।
संग में आप सहाई हो गये,
जब महल से पटक गिराया था॥

प्रहलाद भगत को होलिका लेकर,
ज्वाला बीच बिठाया था।
होलिका जल गई भगत बचाया,
होली का खेल रचाया था॥

हरनाक्ष ने थम्ब बनवाया,
अग्नि से लाल कराया था।
प्रहलाद जी नाम धिया कर चिमटे,
पिता जुलमी हुकम सुनाया था॥

भगत के कष्ट को देख सके ना,
थम्ब को आन चिराया था।
नरसिंह रूप हो आप थे निकले,
हरनाक्ष मार गिराया था॥

ध्रुव भगत इक छोटा बालक,
जा बन में तुझे धियाया था।
चार भुजी हो दर्शन दीने,
भगत का मान बढ़ाया था॥

जिस-जिस शरण है उनकी लीनी,
पल में मदद पहुँचाते हैं।
दुखियों के दुःख को हरने को,
जुग-जुग में स्वयं आते हैं॥

पत्थर में कीट जो रहता है,
उसको भी रिज़क पहुंचाते हैं।
लाख चौरासी जीव चराचर,
सबको ही अपनाते हैं॥

जो चाहें सब कर सकते हैं,
सबके कष्ट मिटाते हैं।
दुःख के सागर चार चुफेरे,
नय्या पार लंघाते हैं॥

हे मेरे ईश्वर जगदीश्वर जी,
हम चरणों में सीस नवाते हैं।
तेरे द्वार पड़े दरबार खड़े,
हम मदद तुम्हारी चाहते हैं॥

जगत पिता दातार पिता,
करुणा के हो भण्डार पिता।
तुम विश्वपति हम मूढ़मति,
हम दुखिया अर्ज़ सुनाते हैं॥

सर्वव्यापक हो जगपालक हो,
मेरे मालिक हो प्रभु ख़ालिक हो।
मेरे राज़िक हो दुःख नाशक हो,
कुछ दुःखड़ा अपना गाते हैं॥

मेरे माधो केशो ठाकुर जी,
दुःख भंजन अलख निरंजन जी।
करुणासिंधु दीनबंधु जी,
पापों की मुआफ़ी चाहते हैं॥

निर्गुण निर-वैर अजन्मे हो,
अनन्त प्रभु बेअन्त प्रभु।
हम बालक हैं तुम मात-पिता,
हम को क्यों आप भुलाते हो॥

ओ३म् तुम्हीं ओंकार तुम्हीं,
निराकार तुम्हीं साकार तुम्हीं।
विष्णु और भगवान् तुम्हीं,
सबकी आश पहुंचाते हो॥

अलोप अगोचर अजर अमर,
सर्वोत्तम हो पुरुषोत्तम हो।
अविनाशी घट-घटवासी हो,
पारब्रह्म कहलाते हो॥

तुम दानी हो हम याचक हैं,
हम भगवन् तेरे उपासक हैं।
तुम दाता हो हम भिक्षक हैं,
बस भिक्षा तुम से चाहते हैं॥

हे नारायण सतनारायण,
अविनाशी हे घटवासी हे।
ब्रह्माण्डपति हे जगतपति,
हम मदद तुम्हारी चाहते हैं॥

तेरे चरणों में हत्थ जोड़ खड़े,
तेरे द्वार पड़े दरबार खड़े।
तेरे चरण फड़ी तेरी शरण पड़े,
खड़े दर पर सीस झुकाये हैं ॥

चरणों में सीस नवाये हैं।
हम शरण तुम्हारी आये हैं ॥

* भगवान् कृष्ण का जन्म *

पापी कंस था जुल्म पे उतरा,
नित नया हुक्म सुनाता था।
अन्न पानी कभी बंद था करता,
कभी कत्ल का हुक्म पहुंचाता था ॥

पापों का बंध गया पाला था,
जुल्मों का भरा प्याला था।
दुखियों का जो रखवाला है,
फिर आप गर्भ में आया था ॥

अति दुखिया दीन बेचारा हो,
जिसका ना कोई सहारा हो।
वह सागर पर्वत जेलों में,
जुग-जुग में स्वयं आता है ॥

वह जग का मालिक पालक जो,
संसार का खालिक राज़िक जो।
उस पाप धर्म के जाचिक ने,
भगतों का कष्ट मिटाया था ॥

कृष्ण अष्टम भादों रात भई,
बादल थे आधी रात भई।
जब चांद की पहली झात पई,
चार भुजी अवतार लिया ॥

जो भगवन् अंतरयामी है,
जो तीनों लोक का स्वामी है।
दुखियों का दुःख में हामी है,
आ जेलों में अवतार लिया ॥

हाय, गंद पड़ा है जेलों में,
गंदे हैं वस्त्र जेलों में।
इक गंदी कैदन जेलों में,
आ भगवन् ने अवतार लिया ॥

देवों ने फूल वर्षाये थे,
संतों ने नाद बजाये थे।
शिव ब्रह्मा शेष महेश सभी,
चरणों में आ नमस्कार किया ॥

जेलों में चमत्कार अलौकिक,
मात-पिता खुशहाल हुए।
त्रिलोकी का दर्श दिखा कर,
कृष्ण जी नन्हें बाल हुए॥
देवकी बोली वसुदेव से,
कहीं दूर छुपादो बालक को।
जिगर का टुकड़ा रो-रो कहती,
कंस न छोड़े बालक को॥
वसुदेव जी उत्तर देते हैं,
पंज मन की मेरे बेड़ी है।
हाथों में हथकड़ी लगी है,
हाय पेश चले मेरी केहड़ी है॥
जन्दरे सात हैं जेलों के,
मेरी चलती कोई तदबीर नहीं।
नग्न कटारें चारों पासे,
ऐसी मेरी तकदीर नहीं॥

*** लेखक का विश्वास ***

जब सीधी नज़र हो भगवन् की,
तदबीरें आप बनाता है।
मंद भाग जनों मनहूसों की,
तकदीरें आप बनाता है॥

ना मुमकिन को साधारण कर,
मुशकल आसान बनाता है।
सौ कष्ट को काटे पल भर में,
खुद ही सामान बनाता है॥
सदके मैं उसकी लीला के,
राई को पर्वत करता है।
हुक्म होवे मेरे ईश्वर का,
सागर को थल कर सकता है॥
धनी को पल में कंगला करदे,
कंगले को तख्त बिठाता है।
महलों वाले बेघर करदे,
शाहों से भीख मंगाता है॥
जो चाहे सब कर सकता है,
वह आग से बाग बनाता है।
लाख चौरासी जीव चराचर,
सब को रिज़क पहुंचाता है।
हुक्म से आदर इज्ज़त देता,
हुक्म से मान बढ़ाता है।
अपमान निरादर हुक्म से होता,
हुक्म से धरत मिलाता है॥

रेत जहां पर उड़ता देखा,
पल में जल बरसाता है।
आकाश में पक्षी उड़ता फिरता,
पल में गल कटवाता है॥

विद्वान् गुणी मैं रुलते देखे,
अनपढ़ धनवान बनाता है।
ना बल चतुराई चलती है,
जो चाहे हुक्म चलाता है॥

अन्धे कुष्टो पिंगले का,
पल भर में कष्ट मिटाता है।
जन्मों के दुःख और रोगों को वह,
फूकें मार उड़ाता है॥

रहता है मेरे मन के अंदर,
बुद्धि दीप जगाता है।
डाली डाली ज़र्रे ज़र्रे,
अपना नूर दिखाता है॥

सर्व शक्तिवान बेअंत प्रभू जी,
पार ब्रह्म कहलाता है।
वेद भी कह गये नेति-नेति,
पार ना उसका आता है॥

लीला प्रभु की अद्भुत है,
ईश्वर ही प्रेम बढ़ाता है।
छज्जूरामा मूर्ख से;
भगवान् कथा लिखवाता है॥

* बालकृष्ण को गोकुल पहुंचाना *

खुल गई हैं बेड़ी हथ-कड़ियां,
दरवाजें आप खुलाये हैं।
नग्न कटार सिपाही भी,
निद्रा ने आन दबाये हैं॥
झट्ट टोकरे डाला बालक को,
वसुदेव जी सीस उठाया है।
उठ भाग चला है जेलों से,
और ध्यान हरी में लाया है॥
रात अंधेरी घुमन्नघेरी,
दौड़ा-दौड़ा जाता है।
ज़िगर का टुकड़ा कहां छुपाऊ,
समझ नहीं कुछ आता है॥
मित्रों की परख है दुःख में होती,
सुख में रिश्तेदार घने।
मुझे आश्रय ईश्वर तेरा है,
मेरा दुःख में मित्र कौन बने!

दुःख में कोई सहायता करता,
सुख में मीत बहुतेरे थे।
दुखिया सोचे किस के जाऊं,
पहले मीत चुफेरे थे॥

जमना नदी जी ठाठां मारे,
उछले है गुन्जार करे।
गल-गल पानी वसुदेव के,
भगवन् से पुकार करे॥

जमना चढ़ती चरण छूण को,
वसुदेव घबराता है।
चरण बढ़ाये बालकृष्ण ने,
पानी नीचे जाता है॥

वसुदेव जी पल में लंघ गये हैं,
गोकुल आन पठाये हैं।
भगवन् ही मेरा काज करेगा,
नन्द के घर को आये हैं॥

नन्द जगाया हांक लगाई,
रो-रो अर्ज सुनाये हैं।
ज़िगर का टुकड़ा पास तुम्हारे,
शरण तुम्हारी आये हैं॥

नन्द जैसा ना मित्तर कोई,
घुट-घुट बगलगीर हुए।
बाल नहीं तेरा लाल है मेरा,
मित्तर क्यों दिलगीर हुए॥

न मुझे डर है कंसराज का,
डर न है तलवारों का।
जान जाय पर धर्म न जाय,
डर न नग्न कटारों का॥

शरीर में जब तक दम है बाकी,
पूर्ण धर्म निभा दूंगा।
तेरे लाल की ख़ातिर निश्चय ही,
मैं जान को बाजी ला दूंगा॥

अंदरों नार जशोधा बोली,
ले जाओ कन्या हमारी को।
कंसराज तुम्हें तंग करेगा,
दे देना भेंट बेचारी को॥

टोकरे डाली कन्या है,
वसुदेव जी हुए रवाना हैं।
सब ईश्वर करने वाला है,
मेरा ऊधम एक बहाना है॥

अर्ज करे वसुदेव हे ईश्वर,
मेरे काज संवारे हैं।
सब के काज संवारों भगवन्,
भगत जो तुमरे प्यारे हैं॥
पल भर में वह जेल में पहुंचे,
जिन्दरे झटपट अड़ गए हैं।
हथ कड़ी और बेड़ी लग गई,
पैहरु सारे खड़ गए हैं॥

* कंस का बालक को मारना *

बालक रुदन अवाज़ सुनी जब,
सूत लई तलवारें हैं।
हो पैहरेदार तैय्यार खड़े,
मानों दुश्मन आ गये भारे हैं॥
कंस पास है पहुंचा अफ़सर,
झटपट ख़बर सुनाई है।
जम्मया वैरी जेलों में है,
आवाज़ रुदन की आई है॥
जब से हुक्म तुम्हारा होया,
हम पैहरा सख्त लगाते थे।
आठ पैहर खड़े पैहरा देते,
आंख न हीं झपकाते थे॥

कई दिन से हम सोये नहीं,
डयूटी का परिणाम देवो।
कामना सिद्ध वधाई तुझको,
राजन हमें इनाम देवो॥

कंस कहे शाबाश है जोधो,
निद्रा न मुझे भी आती थी।
बैरी बचकर निकल न जावे,
सोच यही मुझे खाती थी॥

झटपट कंस तैय्यार होया है,
खंजर हाथ उठाता है।
कह बुलवा लो दरबारी सारे,
जेल को दौड़ा जाता है॥

जेलों में जा बालक छीना,
टांग पकड़ लटकाया है।
खुशी-खुशी दरबार में पहुंचा,
मेरा वैरी हाथ में आया है॥

कंस कहे यह नागिन पुत्र,
जन्म नागिन ने दीना है।
नाग का बच्चा नाग बनेगा,
अज्ज बेशक बल में हीना है॥

गंदे मांस का यह है लोथड़ा,
जन्म नागिन से लीना है।
नागिन पुत्र कभी ना छोड़ूं,
चाहे निर्बल है मसकीना है॥
जो चाहूं सब कर सकता मैं,
मेरे हाथ में इसका जीना है।
आकाशबाणी तो उलटा कह गई,
मैं खून इसी का पीना है॥
जब बालक देखा कन्या है,
गुस्से से लालो लाल हुआ।
कैद करो इन ज्योतिषियों को,
कन्या क्यों है बाल हुआ॥
उत्तर देवो शीघ्र मुझको,
नहीं सब को क़तल करवाऊंगा।
शास्त्र वेद भी झूठे हो गये,
सब को आग लगवाऊंगा॥
आठवां बालक लड़का होगा,
आकाशबाणी भी आई थी।
वह वैरी मुझको मारेगा,
समझ मेरी यही आई थी॥

भुजा घुमाकर कन्या देवी,
पटड़े से पटकाई है ।
हाथ से छूटी अंबर चढ़ गई,
आवाज़ गगन से आई है ॥

वैरी तुम्हारा गोकुल पहुंचा,
तुझको मार लताड़ेगा ।
बारह वर्ष को आन कचहरी,
तुझको मार पछाड़ेगा ॥

कर ले जतन जो ज़ालिम होते,
चलनी न पेश तुम्हारी है ।
सीस रुलेगा इसी कचहरी,
तेरी होनी बड़ी खवारी है ॥

लालो लाल हुआ है कंसा,
आकाशबाणी जब आई है ।
मैं राजों का महाराजा हूं,
क्यों पेश न चलनी काई है ?

फूंक देवो अभी गोकुल सारा,
हुक्म हमारा शाही है ।
कत्ल करो सब नन्हें बच्चे,
इसी में मेरी भलाई है ॥

क्या कुछ जुलम करे है कंसा,
मुझ से लिखे न जाते हैं।
जुलम से कांपें अंबर धरती,
यमदूत भी सब शर्माते हैं॥
कंसराज ने नीच कर्म और,
किये जुलम बेअन्त घने।
जुलम का हाल लिखूं पूरा,
यह भारी एक ग्रन्थ बने॥
ईश्वर जिसका आप सहायक,
क्या बंदा कर सकता है।
आप ही मालिक आप ही बालक,
कंस से न मर सकता है॥
बाल अवस्था फिर लिख दूंगा,
किस-किस से टकराये हैं।
उस कृष्ण कन्नहैया मोहन पर,
कितने सौ वार चलाये हैं॥

* भगवान् कृष्ण की न्यून अवस्था *

थोड़ा हाल लिखूं मैं कृष्णा,
नन्द जी लाड लडाते थे।
मात जशोधा दूध पिलाती,
सदा हरि गुण गाते थे॥

बड़े हुए जब बालकृष्ण जी,
गऊएं आप चराते थे।
ग्वाल बालों के संग में रैहते,
कुञ्ज गलिन में जाते थे॥

अपना हो या बेगानों का,
दूध दही खा जाते थे।
माखन रज्ज-रज्ज खाते थे,
तभी माखनचोर कहलाते थे॥

कभी वह जाते जमना तट पर,
तारी खूब लगाते थे।
रास रचाते मन भरमाते,
बंसी मधुर बजाते थे॥

ग्यारह वर्ष के कुश्ती करते,
हाथी से टकराते थे।
पत्थर फोड़े रुख को तोड़े,
ऐसा गुर्ज़ चलाते थे॥

देख के कौतुक उस बालक के,
जोधे भी घबराते थे।
कई-कई वृक्ष काट थे देते,
जब सुदर्शन चक्र चलाते थे॥

* बलाकृष्ण की कंस से युद्ध की तैय्यारी *

इक दिन बोले साथी कृष्ण से,
भैया तुम रहते खेलों में।
नाना तुम्हारा कैद किया है,
मात-पिता तेरे जेलों में॥
सारी नगरी चर्चा करती,
तुम तो मौज उड़ाते हैं।
बीस वर्ष से जेल के अन्दर,
मात-पिता दुःख पाते हैं॥
मर्द बनो कुछ कर दिखलावो,
मात पिता छुड़वावो ना।
मामा तुमरा मथुरा राजा,
कंस से हाथ मिलावो ना॥
बात सुनी जब बालकृष्ण ने,
झटपट घर को आया है।
मात हमारी सच बतलाना,
कृष्ण ने कथन सुनाया है॥
कौन हैं मेरे मात-पिता जी,
क्यों ना मुझे बुलाते हैं?
मात-पिता मेरे जेलों में हैं,
लड़के बात सुनाते हैं॥

नेत्र भर गये मात जशोधा,
कौन तुझे बहकाता है ?
मात-पिता तेरे नन्द जशोधा,
तुझे उलटी कौन सिखाता है ?
सौगन्ध हमारी मात प्यारी,
सच-सच बात सुना देना।
जिस कैद किये मेरे मात-पिता जी,
बैरी का नाम बता देना॥
माता बोलो या न बोलो,
मुझे सारा हाल सुनाया है।
मामा मेरे मथुरा राजा,
कंस ने कैद कराया है॥
जो कुछ जुलम किये हैं उसने,
सुनी हकीकत सारी है।
माता जो उस से लड़ने की,
मैंने कर ली आज तैय्यारी है॥
मात कहे मत आज्ञा मोड़ो,
पुत्र बड़े सियाने हो।
सोलह वर्ष के होके लड़ना,
बेटा बहुत नियाने हो॥

खूनी हाथी पास हैं उसके,
कंस बड़ा बलधारी है।
संग सदा है राक्षस रखता,
जोधों का लशकर भारी है॥

कृष्ण कहे मुझे भय न बिलकुल,
मेरा खून उबाले खाता है।
धिक्कार है मेरे जीवन पर,
मेरा खून उछाले खाता है॥

चाहे कुछ हो मैं न टल सकता,
मैं कंस से जा टकराऊंगा।
देखूंगा हाथी जोधों को,
जा कंस से हाथ मिलाऊंगा॥

जब विजय धर्म ने पानी है,
माता जी क्यों घबराती हो।
मैं मर्द हूं बदला ले लूंगा,
मुझे कंस से क्यों डराती हो॥

माता जी क्या तुम कहती हो,
यह बालक एक नियाना है।
उस ज़ालिम पापी कंसा का,
मैंने काल बली बन जाना है॥

प्रणाम है माता चरणों में,
कंधे पर गुर्ज़ उठाता है।
आसीस देवो माता प्यारी,
तेरा बालक रण को जाता है॥

बेसुध हो गई मात जशोधा,
जब हो गया कृष्ण रवाना है।
मेरा कृष्ण बहकाया लड़कों ने,
हाय वैरी हुआ ज़माना है॥

बलराम पुत्र को मात जशोधा,
झटपट पास बुलाया है।
गया कंस से लड़ने वीर तुम्हारा,
संग कृष्ण जाओ फरमाया है॥

तेरह वर्ष का बालक जोधा,
देर जरा ना लाई है।
गुर्ज़ उठाया हाथों में है,
तेग़ कमर लटकाई है॥

मात कहे सुन लाडले पुत्र,
दूध पिया तुम मेरा है।
दूध मेरे को लाज ना लावीं,
कुछ समझना धर्म जो तेरा है॥

गिरे पसीना कृष्ण जहां पर,
अपना खून बहा देना।
बिना कृष्ण ना मुँह दिखलाना,
भ्रातृ-धर्म निभा देना॥

आशीर्वाद मैं देती पुत्तर,
ईश तेरा दिग्दर्शक हो।
विजय परापत करके आना,
भगवान् तुम्हारा रक्षक हो॥

बलराम चला है जल्दी-जल्दी,
लम्बे कदम उठाता है।
खुशी-खुशी रण बालक जावे,
मिल गया कृष्ण भ्राता है॥

भाई कृष्ण मुड़ जावो गोकुल,
तूं छोटा मेरा भ्राता है।
लड़ूं कंस से आप अकेला,
धर्म यही सिखलाता है॥

कृष्ण कहे मुड़ जाओ भैया,
याद तुम्हारी आयेगी।
इकलौते लाल जशोधा के,
पुत्तर कह किसे बुलायेगी।

ना मुड़ता कोई पीछे है,
संग चलते दोनों भाई हैं।
चलते-चलते मंज़िल मंज़िल,
मथुरा की गलियां आई हैं॥
देख के बालक शस्त्रधारी,
कहते लोक लुकाई हैं।
कंस रावण के मारन को,
आए राम लखन दो भाई हैं॥

* राजा कंस का दरबार *

तख्त सुनहरी कंस है बैठा,
सिर पर ताज सजाया है।
खड़े सिपाही चारों पासे,
तलवारों की छाया है॥
कुर्सी-कुर्सी जोधे बैठे,
तलवारें नंगी हाथों में।
झूम रहे हैं खूनी हाथी,
संगल उनके दांतों में॥
फौज़ खड़ी है परे बांध कर,
राक्षस बैठे काले हैं।
पहलवान हैं गुर्ज़ उठाए,
सब लड़ने के मतवाले हैं॥

दरबार कंस है काल निशानी,
यमदूत भी आ घबराता है।
खौफ़ बड़ा कोई बोल न सकता,
काल भी आ थर्राता है॥
कंस कहे मेरे तुल्लय ना कोई,
मैं राजों का महाराजा हूं।
जो चाहूं सब कर सकता हूं,
अन्नदाता ग़रीब निवाजा हूं॥
शेर बली महां जोधा हूं मैं,
मेरा वायु पानी भरती है।
मेरे खूनी हाथी जोधों से,
दुनिया ही सारी डरती है॥

* कृष्ण बलराम का कंस से युद्ध *

बालक पहुंचे आन कचहरी,
कंस को जा ललकारा है।
वार करो तुम कंसा पहिले,
आ गया काल तुम्हारा है॥
देख के बालक छोटे-छोटे,
कंस बहुत ही हँसता है।
यह जोधे मुझ को मारेंगे,
फिर खिड़-खिड़ करके हँसता है॥

कंस कहे तुम सुन्दर बालक,
बेशक अभी नियाने हो।
न मान किया प्रणाम किया,
बुद्धि में बिलकुल काने हो॥

मैं राजों का महाराजा हूं,
करनी न बात सिखाई है।
मुझे दुनिया सीस निवाती है,
मैंने राज की पदवी पाई है॥

तुम किससे बातें करते हो,
तुम्हें मौत यहां पर लाई है।
मेरे खूनी हाथी जोधों की,
ताकत न तुम्हें बताई है॥

प्रणाम बुलाना चाहिये था,
दरबार की रीत सिखाई है।
मान करो महाराजों का,
न विद्या तुम्हें पढ़ाई है॥

कृष्ण कहे सुन पापी राजा,
पिता अपना कैद कराया है।
निर्दोषी भैण भनोईया को,
जेलों में बंद कराया है॥

तुम नीच को क्यों प्रणाम करें,
हम आये हाथ मिलाने को।
तेरे खूनी हाथी जोधों से,
आये हैं हम टकराने को॥

पकड़ लवो यह तक्षक ज़हरी,
कंस ने हुक्म सुनाया है।
चर्र-चर्र बोलें दण्ड मिलेगा,
काल इन्हों का आया है॥

मेरी शीतल बाणी करुणा को,
इन्हों उलटा अर्थ लगाया है।
मेरे खूनी हाथी जोधों को,
बच्चों का खेल बनाया है॥

तरस न मुझको बिलकुल आता,
जेलों में इन्हें पहुंचाऊंगा।
अपमान किया मेरा भरी कचहरी,
पूरी सज़ा दिलाऊंगा॥

देवकी देखे पुत्तर अपना,
सन्मुख ही क़तल कराऊंगा।
चोरी से पुत्र छुपाया था,
उन्हें फांसी पर लटकाऊंगा॥

हुक्म दिया है सात सिपाही,
घेरे में इन्हें डाल लेवो।
भाग न जायें डर कर बालक,
गरदन में रस्सियां डाल लेवो॥

सात सिपाही बढ़ गये आगे,
बलराम जो गुर्ज उठाता है।
गुर्ज की ऐसी चोट चलाई,
सात को धर्त मिलाता है॥

सात सिपाही मरने से,
दरबार में हाहाकार मची।
टूट पड़े सब जोधे उन पर,
पल में है अंधकार मची॥

दोनों भाई पीठ जोड़ कर,
ऐसे गुर्ज चलाते हैं।
सात को मारें एक चोट से,
डरते दस गिर जाते हैं॥

खून की नदियां बह निकली हैं,
जोधे फटाफट गिरते हैं।
बड़े लड़य्या बालक देखे,
सीस कटाकट गिरते हैं॥

सवा घड़ी में जोधे मारे,
पूले की तरह बिछाते हैं।
बालक बढ़ रहे दे ललकारा,
कंस से लड़ना चाहते हैं॥

कंस कहे मेरे राक्षस जोधो,
तुम क्यों देर लगाते हो?
शिकार तुम्हारा सन्मुख आया,
क्यों न पकड़ चबाते हो?
कंस को बड़ा भरोसा है,
जब उछले राक्षस काले हैं।
यह कंस के अंतिम रक्षक हैं,
और आफ़त के परकाले हैं॥
वृक्षों को पकड़ गिराते हैं,
पैरों से धर्त हिलाते हैं।
बिकराल रूप हैं बड़े भयानक,
आदम को खा जाते हैं॥

शोर मचा कर राक्षस बढ़ गये,
भाले तलवार चलाते हैं।
बालक जोधे बड़े खिलाड़ी,
सारे वार बचाते हैं॥

मौका पाकर वार चलाते,
सीस पे चोट जमाते हैं।
चोट न खाली इन शेरों की,
टुकड़े सीस हो जाते हैं॥

जिस के चोट लगे है पहिली,
धरती बीच मिलाते हैं।
धम-धम गिरते काले राक्षस,
फिर भी न घबराते हैं॥

बढ़ गया दल है राक्षस सारा,
हल्ला बड़ा मचाते हैं।
घेर लिये हैं बालक दोनों,
पकड़ के खाना चाहते हैं॥

मात जशोधा का दूध पिया है,
बाल नहीं घबराते हैं।
खाली हाथ ही लड़ते जोधे,
शस्त्र दूर गिराते हैं॥

टांग पकड़ कर मारें घुमाकर,
धरती से पटकाते हैं।
पकड़ें गर्दन दो-दो की हैं,
सीस से सीस भिड़ाते हैं॥

भागो भाग का शोर मचा है,
राक्षस भागे जाते हैं।
पकड़-पकड़ के राक्षस मारें,
सीस से सीस बजाते हैं॥
लहुलुहान हो राक्षस गिर गये,
रोते और चिल्लाते हैं।
जब जान प्यारी निकले है,
मैय्या को पास बुलाते हैं॥
उलट गया है रण का पासा,
कंस बहुत घबराता है।
क्या बज्जर के यह बालक हैं!
मेरी समझ नहीं कुछ आता है॥

* बालकृष्ण का खूनी हाथी से युद्ध *

छोड़ देवो बड़ा खूनी हाथी,
कंस खड़ा ललकारे है।
खूनी हाथी संगल मुंह में,
मारता आवे फुंकारे है॥
कृष्ण जी बढ़कर आगे हो गये,
हाथी से टकराते हैं।
सात कदम हो हाथी पीछे,
पहिली चोट जमाते हैं॥

झपटें ले-ले हाथी आता,
संगल वार चलाता है।
बालक जोधा बड़ा खिलाड़ी,
सारे वार बचाता है॥

मौका पा कर पकड़ा संगल,
झटका मार छुड़ाता है।
खून की धारा मुंह से निकली,
हाथी भी घबराता है॥

घुटने टेक दिये हाथी ने,
जब कूद के गुर्ज़ चलाते हैं।
भाग के जोधे टक्कर मारी,
गज को चित्त गिराते हैं॥

घुटना टेक दिया गर्दन पर,
हाथ से सूंड दबाते हैं।
चीखें मार रहा है हाथी,
ऐसे दाव चलाते हैं॥

सूंड पकड़ कर चक्री देते,
चारों ओर घुमाते हैं।
कभी उठाते सिर से ऊंचा,
धरती से पटकाते हैं॥

सात बार है गज को पटका,
हाथी स्वर्ग पहुंचाते हैं।
कुश्ती करके मारा हाथी,
जोधे वीर कहलाते हैं॥

बलराम जी जोधे गोधे सारे,
पकड़-पकड़ पटकाते हैं।
पहलवान् और राक्षस काले,
इक-इक मार गिराते हैं॥

कांप रहे दरबारी सारे,
भयानक बड़ी लड़ाई है।
ज़िंदा किसी को यह न छोड़ें,
मौत हमारी आई है॥

कांप उठा है कंसा ज़ालिम,
भाग के जान बचाता है।
कृष्ण ने पकड़ा जा केशों से,
चारों ओर घुमाता है॥

कंस कहे मैं मामा तेरा,
क्या तरस न तुझको आता है?
भानजा मारे मामे को, हाय!
कलियुग आता जाता है॥

* कंस का वध और माता-पिता से मिलाप *

मारा घुमाके पटड़े से है,
टुकड़े सीस हो जाता है।
ताज जिसे पहनाता था,
वह सीस ठोकरें खाता है॥
हाथ बांध दरबारी खड़ गये,
चरणों में सीस झुकाये हैं।
बखशनहारे हम को बख्शो,
हम शरण तुम्हारी आये हैं॥
पता चला जब नगरो अंदर,
सब ने दर्शन पाया है।
बाल नहीं यह आप प्रभु हैं,
चरणों में सीस झुकाया है॥
सब से पहिले आप कृष्ण जी,
नाना कैद कढाया है।
चरण में पड़ गये दोनों बालक,
नाना तख्त बिठाया है॥
कैद [जहां पर मात-पिता जी,
आ गये दोनों भाई हैं।
हाल समय का लिख न सकता,
संग में लोक लुकाई हैं॥

हाथ बांध के बालक खड़ गये,
चरणों को हाथ लगाये हैं।
प्रणाम हमारा मात पिता जी,
चरणों में पुत्र आये हैं॥
कृष्ण कहे मंद भाग बड़ा मैं,
तुम्हें इतना कष्ट पहुंचाया है।
मेरे मात-पिता मेरे कारण ही,
तुम इतना कष्ट उठाया है॥
नेत्र भर गये मात-पिता के,
सागर इंजू धारों का।
खुशी है कितनी लाल क्या होया,
जन्म के दो दुखियारों का॥
बुद्धिहीन है क्या लिख सकता,
मात-पिता के प्यारों का।
मूर्ख छज्जूराम क्या लिख दे,
बालकृष्ण सत्कारों का॥

*

रुक्मणी विवाह

(हिन्दी कविता)

* श्री गणेशाय नमः *

रुक्मणी विवाह

परीक्षित पूछे सुखदेव मुनि से,
कथा मैं सुनना चाहता हूं।
कैसे कृष्ण ने रुक्मणी ब्याही,
वृतान्त मुनि जी चाहता हूं॥
अपार कृष्ण की माया राजन्,
सुखदेव मुनि समझाता है।
जो कोई जैसे कृष्ण ध्याये,
वैसा ही फल पाता है॥
कुबजा कुबड़ी रूप थी चाहती,
युवती उसे बनाता है।
रुक्मणी चाहती पति बनाना,
रुक्मणी हरण कराता है॥
नन्द जशोधा पुत्र समझें,
प्रेम उन्हें दिखलाता है।
बालक बनके गोद में खेले,
उखली से बन्ध जाता है॥
गोपियां समझें प्यारा अपना,
संग में रास रचाता है।
सुदामा भगत जी सखा बनावे,
दरिद्र सारा मिटाता है॥

कंस अपना है शत्रु समझे,
शत्रु ही बन जाता है।
मल्ल पछाड़े गज को मारा,
कंस को स्वर्ग पहुंचाता है॥

सोलह हजार एक सौ आठ रानियां,
भगवान् कृष्ण प्रणाता हैं।
इतने ही प्रभु रूप बनाकर,
सब से रमन कराता है॥

अबला द्रौपदी कृष्ण पुकारा,
सन्मुख दर्श दिखाता है।
द्रौपदी लाज बचाई प्रभु ने,
लाखों चीर बनाता है॥

अर्जुन को जब मोह था ब्यापा,
योगेश्वर बन जाता है।
गीता का उपदेश सुनाया,
विराट स्वरूप दिखाता है॥

पांडव समझें सम्बंधी अपना,
रथवान कृष्ण बन जाता है।
पांडव पांच और कौरव लाखों,
पूर्ण विजय दिलाता है॥

ध्यायेगा यथा छज्जुरामा,
वैसा ही फल पायेगा।
मात-पिता सम कृष्ण ध्यावें,
भगवान् का दर्शन पायेगा॥

सुखदेव मुनी कहे पाण्डो राजा,
अब रुक्मणी हरण सुनाता हूं।
कृष्ण जी चाहते जो उसे ध्यावे,
सारी कथा सुनाता हूं॥
विदर्भ देश में कुन्दनपुर है,
भीष्मक वहां का राजा था।
रुकम जी उसका बड़ा था पुत्र,
वह कर्ता धर्ता राजा था॥
रुक्म रुक्मरथ रुक्बाहू आदि,
पांच यह उसके पुत्र थे।
रुक्म बली रुक्न केशा नामी,
उसके पांच सुपुत्र थे॥
रुक्मणी कन्या एक थी उसकी,
सुन्दरी महा ज्ञानी थी।
धर्म कर्म में पूरी-पूरी,
सुघड़ सुशील सुजानी थी॥

भीष्मक राजा छोटे पुत्र,
कृष्ण से ब्याहना चाहते थे।
बड़ा पुत्र जो रुक्म था उसका,
कृष्ण से बैर कमाते थे॥
रुक्म कहे यह कृष्ण है ग्वाला,
शूरवीर न राजा है।
गोकुल में था गौओं चराता,
अधम हो उसको साजा है॥
कहां कृष्ण ग्वाला कहां हम राजे,
हो सकता संयोग नहीं।
कृष्ण की निन्दा जग है करता,
रुक्मणी बहिन के योग नहीं॥
शिशुपाल से अपनी बहिन ब्याहूं,
जो चन्देली का महाराजा है।
सैंकड़ों राजे अधीन हैं उसके,
प्रसिद्ध बली वह राजा है॥
शिशुपाल से मांगी रुक्मणी कन्या,
चिट्ठी ब्याह की भिजवाई है।
सारे राजे संग में लाना,
भारी जन्न मंगवाई है॥

रुक्मणी देवी भीष्मक कन्या,
कृष्ण जी को ही चाहती है।
सोते जागे उठे बैठे,
कृष्ण का नाम ध्याती है॥
शिशुपाल की जब है जन्न मंगाई,
रुक्मणी बहुत घबराती है।
अनेक दलीलां मन में सोचे,
रुक्मणी मरना चाहती है॥
वृद्ध ब्राह्मण घर में आता,
रुक्मणी पास बुलाती है।
इक कार्य करो सम्पूर्ण मेरा,
चरणी हाथ लगाती है॥
ब्राह्मण देवता कार्य मेरा,
पास कृष्ण के जाना है।
प्रेम भरी मैं चिट्ठी लिखनी,
द्वारिकापुरी पहुंचाना है॥
मैंने कृष्ण जी पति है धारा,
खोल संदेश सुनाना है।
मरूं मैं जलकर छज्जूरामा,
यदि कृष्ण न माना है॥

स्वर्ण सिंहासन कृष्ण जी बैठे,
द्वारिकापुरी में आये हैं।
कौन हैं मेरी प्रीति करते,
ब्रह्म में ध्यान लगाये हैं॥

बाहर से आया चोबदार है,
कृष्ण को अर्ज़ सुनाये हैं।
बाहर खड़ा इक दूत स्वामी,
कोई पत्र लेकर आये हैं॥

हुक्म आपका उसे बुलाऊं,
संदेश ज़रूरी लाये हैं।
भगवन् ने है आज्ञा दीनी,
ब्राह्मण जी अंदर आये हैं॥

देख के ब्राह्मण दूत कृष्ण जी,
सिंहासन नीचे आये हैं।
प्रणाम बुलाया हाथ जोड़ कर,
सिंहासन उसे बिठाये हैं॥

मिष्ठान भोजन कृष्ण मंगाया,
अपने हाथ जिमाये हैं।
दूध मलाई बरफी पेड़े,
पदार्थ सभी खिलाये हैं॥

ब्राह्मण देवता तृप्त हुए हैं,
कृष्ण जी चरण दबाये हैं।
थक गये हो ब्रह्म देवता,
प्रेम से कथन सुनाये हैं॥

अंतरयामी कृष्ण जी पूछें,
देवता कहां से आये हैं।
क्या प्रयोजन हम से स्वामी,
सागर पार जो आये हैं॥

ब्राह्मण कहता गुप्त संदेशा,
भगवन् लेकर आया हूं।
कृष्ण जी पढ़ लो जो कुछ लिखया,
मैं पत्र लेकर आया हूं॥

भीष्मक राजा की रुक्मणी कन्या का,
प्रेम संदेशा लाया हूं।
पति बनाना तुझको चाहती,
इस कारण मैं आया हूं॥

भगवन् कहते ब्रह्म देवता,
यह पत्र मुझे सुना देना।
जो कुछ लिखया रुक्मणी ने है,
पढ़ कर मुझे बता देना॥

ब्राह्मण देवता चिट्ठी खोली,
चिट्ठी बांच सुनाता है।
रुक्मणो ने जो पत्र भेजा,
ब्राह्मण देव सुनाता है॥

●●●

* रुक्मणी जी का पत्र *

दण्डवत माधो कृष्ण कन्हैया,
भीष्मक राज कुमारी की।
आशा भगवन् पूर्ण करना,
रुक्मणो राज दुलारी की॥
दासो प्रभु जी मुझे बनावो,
इच्छा रुक्मणी प्यारी की।
पति तुम्हें मैं धारण कोना,
प्रतिज्ञा राज कुमारी को॥
सुने हैं गुण मैं नारद ऋषि से,
महिमा कृष्ण मुरारी की।
कथा सुनी तेरी प्रेम से भगवन्,
लीला कुंज बिहारी की॥
नन्हें थे प्रभु मुक्ति दीनी,
वारता पूतना नारी की।
उंगली पर था पर्वत धारा,
लीला गिरिवर धारी की॥

किस तरह प्रभु जी नाग पे नाचे,
नाग कथा विष धारी की।
अनेक ही राक्षस तुमने मारे,
महिमा है बल धारी की॥
गज को मारा कुश्ती करके,
लीला कृष्ण मुरारी की।
बारह वर्ष के ने कंस पछाड़ा,
उपमा है बनवारी की॥
नन्द जशोधा गोकुल नगरी,
मुक्ति जमता सारी की।
ब्रह्मलोक के दर्श कराये,
कृपा सब पर भारी की॥
किस तरह प्रभु जी दी तरुणाई,
युवती कुब्जा नारी की।
मैं भी आशा लेकर भगवन्,
आ गई शरण मुरारी की॥
यदि कृष्ण जी न अपनाया,
धारणा राज कंवारी की।
जल कर मरूं मैं छज्जुरामा,
प्रतिज्ञा रुक्मणी प्यारी की॥

जब से सुनी है कृष्ण जी उपमा,
कान मेरे में आई है।
भगवान् कृष्ण जी तेरी मूरत,
हृदय मेरे समाई है॥

किस तरह पास तुम्हारे पहुंचूं,
कोई विधि न पाती हूं।
मुख पर रहता नाम तुम्हारा,
आठ पहर तुझे ध्याती हूं॥

करोगे भगवन् मदद हमारी,
आत्मा मेरी कहती है।
आठ पहर ही प्रभु जी तेरी,
मेरे हृदय मूरत रहती है॥

उपमा सुन कर कृष्ण जी तेरी,
ऐसी कौन कंवारी है?
जो न कृष्ण को पति बनावे,
ऐसी कौन सी नारी है?

इस तरह भगवन् पति बनाना,
कुलवन्ती को योग नहीं।
शिशुपाल ब्याहूं, तुझे त्यागूं,
बनता प्रभु संयोग नहीं॥

कृष्ण जी दासी मुझे बनाना,
यह ही अर्ज हमारी है।
चरण दबाऊं करूंगी सेवा,
रुक्मणी आज्ञाकारी है॥

छोटे भाई, माता मेरी,
पिता भी तुझ को चाहता है।
बड़ा भाई जो रुक्म है मेरा,
तुझ से बैर कमाता है॥

शिशुपाल को कहता बली महाराजा,
तुझे ग्वाल का बाल बनाता है।
शिशुपाल की करता है बड़ाई,
निन्दा तेरी कराता है॥

पूर्ण निश्चय भगवन् मुझ को,
तुम शिशुपाल को धरत गिराओगे।
सैना उसकी साथी राजे,
सब को मथन कराओगे॥

गिद्दड़ झुण्ड हैं क्या कर सकते,
तुम शेर की न्याईं आओगे।
भाग तुम्हारा रुक्मणी दासी,
पल में ही ले जाओगे॥

HYDERABA

रुक्म ने ब्याह है नियत कीना,
शिशुपाल ने कल को आना है।
जरासंध शाल्व सारे राजे,
भारी फौज ले आना है॥

शिशुपाल का हाथ लगे न मेरे,
कोई विधि बनाना है।
सब के देखते-देखते भगवन्,
रुक्मणी हरण कराना है॥

रीति हमारी भगवन् मेरे,
नव वधु मन्दिर जाती है।
सायं काल पति जी मेरे,
अम्बिका पूजन करती है॥

इसी तरह से मैं भी स्वामी,
कल को मन्दिर जाऊंगी।
अम्बिका देवी पूजन करके,
पार्वती जी को ध्याऊंगी॥

संग सहेलियां ब्राह्मनियां ले कर,
दुर्गा पूजा कराऊंगी।
कृष्ण विजयी हों कृष्ण पति हों,
वर उन से मैं पाऊंगी॥

ख्याल प्रभु जी मेरा रखना,
जब मन्दिर से मैं आऊंगी।
देखके स्वामी कृष्ण जी तुझ को,
अपनी भुजा उठाऊंगी॥
प्रबंध प्रभु जी पूर्ण करना,
शीघ्र मुझे उठाना है।
डरेगी दासी भगवन् तेरी,
रथ पर मुझे चढ़ाना है॥
शत्रु होंगे चार चुफेरे,
रथ को प्रभु दौड़ाना है।
छज्जूराम जो वार चलावे,
उस को मार गिराना है॥

●●●

ब्राह्मण कहता सुनाकर चिट्ठी,
भगवन् क्या मन में धारी है?
करो प्रभु जो देर जरा न,
कर लो शीघ्र तैयारी है॥
सारी नगरी तुझ को चाहती,
प्रभु तेरी ही इन्तजारी है।
रुक्मणी तेरी बाट है देखे,
सोच उसे हुई भारी है॥

छज्जूराम भी वहां पे जावे,
यदि आज्ञा प्रभु तुम्हारी है।
किस तरह रुक्मणी हरण करोगे,
कथा लिखेगा सारी है॥

●●●

कृष्ण जी कहते ब्रह्म देवता,
रुक्मणी मैं भी चाहता हूं।
जैसे रुक्मणी मुझे ध्यावे,
मैं भी उसे ध्याता हूं॥
अभो मैं अपना रथ मंगवाऊं,
कुन्दनपुर को जाता हूं।
पल की पल में देखते जाना,
रुक्मणी हरण कराता हूं॥
कितनी सेना राजे होवें,
देखते सब रह जायेंगे।
डरते नहीं हम यादववंशी,
रुक्मणी उठाकर लायेंगे॥
दारुक सारथी कृष्ण बुलाया,
आज्ञा उसे सुनाते हैं।
शीघ्र हमारे रथ को लावो,
दारुक रथ ले आते हैं॥

सुन्दर रथ है गरुड़ चिह्न का,
घोड़े चार जुड़ाते हैं।
देवता बैठो रथ के भीतर,
भगवान् कृष्ण फरमाते हैं॥
पहले चढ़ाया ब्राह्मण को है,
फिर आप कृष्ण चढ़ जाते हैं।
रथ हांके हैं कृष्ण जी स्वयं,
रथ को तेज दौड़ाते हैं॥
आवर्त देश से विदर्भ देश में,
कुन्दनपुर आ जाते हैं।
एक रात के भीतर में हो,
पहुंच कृष्ण जी जाते हैं॥
ब्रह्म ऋषि संदेश पहुंचावो,
कृष्ण यहां पर आते हैं।
रुक्मणी जी को देनी ढारस,
हम भी उसको चाहते हैं॥

* शिशुपाल की जन्न *

दमनघोश शिशुपाल पिता जी,
खुशियां बड़ी मनाये हैं।
पुत्र ब्याह का दिवस है आया,
दान बहुत करवाये हैं॥

शिशुपाल के बटना लाया माता,
मल-मल के नहलाये हैं।
शिशुपाल के हाथ में कंगना बांधा,
नये-नये वस्त्र पहनाये हैं॥

नगरी के सब ब्राह्मण आ गये,
स्वस्ति वचन सुनाये हैं।
राजा ने ब्रह्मभोज है कीना,
सारे शगुन मनाये हैं॥

ढोल धमाके बर्जे नगारे,
बाजे बजते जाये हैं।
जरासंध शाल्व दंतवक्र राजे,
पौंडर राजे आये हैं॥

हाथी रथ और घोड़े पैदल,
चतुरंगिणी सैना लाये हैं।
सब राजों की सैना भारी,
सब को हुक्म सुनाये हैं॥

शस्त्र अस्त्र पूरे पहनो,
मानो रण को जाये हैं।
रहना सजग शत्रु से हरदम,
पहले ही समझाये हैं॥

यादव वंशी कृष्ण कन्हैया,
अवश्य वहां पर आयेगा।
कृष्ण कन्हैया, बड़ा फ़तूरी,
उपद्रव ज़रूर करायेगा॥
शत्रु हमारे यादव वंशी,
यदि कृष्ण जी ज़ोर अजमायेगा।
मार देना बलराम कृष्ण को,
यदि ब्याह में विघ्न मचायेगा॥
राजा कहता देख के सेना,
भाग कृष्ण जी जायेगा।
छज्जूराम कर देना टुकड़े,
यदि कृष्ण वहां पर आयेगा॥

●●●

भीष्मक राजा कुन्दनपुर की,
नगरी खूब सजाये हैं।
गलियां कूचे साफ़ हैं कीने,
सड़कें साफ़ करवाये हैं॥
बाजारों में छिड़काव है कीना,
दरवाजे कई बनवाये हैं।
सुगंधित अतर है उन पर छिड़का,
फूलों से सजवाये हैं॥

घर-घर बंध रहीं बन्दनवारां,
नारां मंगल गाये हैं।
जगह-जगह पर खड़े सिपाही,
शस्त्र पांच सजाये हैं॥

●●●

शिशुपाल जी ढुक्के कुन्दनपुर में,
भारी जन्न लियाये हैं।
जन्न को देखने जनता आ गई,
जन्न की उपमा गाये हैं॥
आगे घोड़े धौसयां वाले,
धौंसे बजते जाये हैं।
पैदल चल रहे बाजे वाले,
नई-नई रागिनी गाये हैं॥
शिशुपाल की घोड़ी जन्न के आगे,
सेहरा मुख बंधवाये हैं।
सैंकड़ों हाथी उन के पीछे,
हौदे स्वर्ण सजाये हैं॥
घोड़े पीछे कई हजारां,
ऊपर जवान चढ़ाये हैं।
सारे ही हैं शस्त्र धारी,
नंगी तलवार दिखाये हैं॥

रथ मझोलियां टम-टम बग्घियां,
छम-छम करती आये हैं।
बड़ा भारी है लशकर पीछे,
शस्त्र सभी उठाये हैं॥
किसी के हाथ में हैं तलवारें,
बरछे किसी उठाये हैं।
किसी के पास हैं तीर कमाना,
जोधे गुर्ज घुमाये हैं॥
भाला कोई, कोई तेग दोधारी,
कई नग्न कटार उठाये हैं।
जन्न नहीं यह भारी सैना,
जनता कथन सुनाये हैं॥

●●●

भीष्मक राजा, रुक्म और राजे,
स्वागत को सब आते हैं।
बाग में सुन्दर महल उन्हों का,
डेरा वहां करवाते हैं॥
अनेक किस्म की बनी मिठाईयां,
भर-भर थाल ले जाते हैं।
नौकर खड़े हैं चार चुफेरे,
जो मांगो सो लाते हैं॥

देख के भारी जन्न रुक्म जी,
अभिमान से कथन सुनाते हैं।
कहां कृष्ण ग्वाला कहां शिशुपाल महाराजा,
नाक मेरी कटवाते हैं॥

●●●

रुक्मणी सुना शिशुपाल है आया,
रुक्मणी बहुत घबराती है।
न ही ब्राह्मण मुड़कर आया,
खबर न कोई पाती है॥
ब्राह्मण गया या नहीं द्वारिका!
ख्याल अनेक दौड़ाती है।
भगवान् मिले या नहीं हैं उसको!
समझ नहीं कुछ आती है॥
कृष्ण क्या मुझ से घृणा करते!
प्रीत उन्हें न आती है!
कुकर्म क्या समझें हरण कंवारी!
क्या नफरत मुझ से आती है!!
धरती गिर कर दण्डवत करती,
कृष्ण ही कृष्ण सुनाती है।
चिन्ता मग्न रुक्मणी होकर,
गीत कृष्ण के गाती है॥

ब्राह्मण देवता आन है पहुंचा,
रुक्मणी भाग के आती है।
मिले क्या तुझ को कृष्ण कन्हैया,
आंसू आंख बहाती है॥

चुपके से कहे वृद्ध ब्राह्मण,
कृष्ण कन्हैया आये हैं।
भगवान् कृष्ण जी बड़े दयालु,
आदर मेरा कराये हैं॥

मैं भिक्षुक निर्धन गरीब ब्राह्मण,
सिंहासन मुझे बिठाये हैं।
कृष्ण ने मुझ को हाथ थे जोड़े,
मेरे चरण दबाये हैं॥

रुक्मणी जी का प्यार है मुझ को,
भगवान् कृष्ण फरमाये हैं।
रुक्मणी जी को हरण करूंगा,
चाहे शत्रु लाख ही आये हैं॥

आगमन कृष्ण का रुक्मणी सुनकर,
सौ-सौ शुक्र मनाती है।
कृष्ण जी मुझ को प्यार हैं करते,
खुशियां बड़ी मनाती है॥

शीघ्र उठ स्नान है करती,
नये-नये वस्त्र पाती है।
धूप जलाती जोत जगाती,
कृष्ण का ध्यान लगाती है॥

●●●

सुन के जन्न की रुक्मणी माता,
पुत्री के शगुन मनाती हैं।
बटना मल स्नान कराया,
कंगना हाथ बंधाती हैं॥
मोहरां सीस पे उसके वारें,
दान पुण्य करवाती हैं।
सखी सहेलियां हुईं एकत्र,
मंगल मिल कर गाती हैं॥
भोष्मक राजा बड़ा खुशी है,
ब्राह्मण सब बुलवाये हैं।
विवाह के शगुन मूर्त लाये,
स्वस्ति वचन सुनाये हैं॥
ब्रह्मभोज है प्रेम से कीना,
दान बहुत करवाये हैं।
दर से खाली कोई ना जावे,
भोष्मक जी फरमाये हैं॥

भोष्मक जी ने खबर सुनी है,
श्री कृष्ण जी आये हैं।
प्रेम से उनका स्वागत कीना,
योग स्थान दिलाये हैं॥

रुक्म सुना जब कृष्ण है आया,
अति क्रोध में आया है।
कृष्ण यहां पर क्यों है आया?
किस ने उसे बुलाया है?
जहां पर जन्न शिशुपाल है ठहरी,
भागा-भागा आया है।
राजे सारे एकत्र कीने,
शिशुपाल को कथन सुनाया है॥

कृष्ण करेगा कोई उपद्रव,
समझ मेरी में आया है।
बहिन मेरी न उठा ले जावे,
पापी कृष्ण जो आया है॥

कृष्ण कन्हैया बड़ा फतूरी,
शुभ कार्य में विघ्न मचाता है।
बिना बुलाये यहां है आया,
शर्म जरा न खाता है॥

अकेला कृष्ण चला है आया,
अपना ज़ोर दिखाता है।
करता है जो मन में आवे,
न भय किसी से खाता है॥

सारे राजे रुक्म को कहते,
रुक्म जो भय क्यों खाते हो?
क्या कर सकता कृष्ण बेचारा?
राजन क्यों घबराते हो?

बड़ी भारी है सेना हमरी,
हम वीर महाबली सारे हैं।
जरासंध शाल्व पौंडर राजे,
दन्त वक्र जोधे भारे हैं॥

हम न कृष्ण को जाने देंगे,
घेरा अभी से पायेंगे।
सैना खड़ावें दूर-दूर तक,
पहरा सख्त लगायेंगे॥

आज का दिन भी शुभ ही समझो,
हम कृष्ण को स्वर्ग पहुंचायेंगे।
यादव वंशी यदि और भी आवें,
अपनी जान गंवायेंगे॥

रुक्म राजा ने सेना का फिर,
पहरा सख्त लगाया है।
दस-दस कदम पर पांच सिपाही,
शस्त्र हाथ उठाया है॥
सेना ने है घेरी नगरी,
सब को हुक्म सुनाया है।
कृष्ण न जिन्दा जाने पावे,
मंत्र यही सिखाया है॥

●●●

* रुक्मणी जी का मन्दिर जाना *

रुक्मणी जी है बड़ी खुशी में,
सोलह शृङ्गार लगाती है।
नथ चूड़ा सब भूषण पहिने,
मोती सीस सजाती है॥
लक्ष्मी जी का रूप बनो है,
सुन्दर वस्त्र पाती है।
पूजा करने मन्दिर जाती,
कृष्ण का नाम ध्याती है॥
सैंकड़ों दासियां संग में उस के,
सखियां संग ले जाती है।
ब्राह्मणियां जा रहीं मंगल गातीं,
गीत अनेकां गाती है॥

सैंकड़ों जोधे रक्षक संग में,
आगे पीछे जाते हैं।
फौज खड़ी है चार चुफेरे,
मन्दिर को पहरा पाते हैं॥

रुक्मणी जी है मन्दिर पहुंची,
अम्बिका पूजा कराती है।
हाथ पैर धो आचमन कीना,
प्रेम से जोत जगाती है॥

सुहागन ब्राह्मणियां पूजन करातीं,
सारी विधि सिखाती हैं।
धूप दीप हैं पुष्प चढ़ाये,
मस्तक तिलक लगाती हैं॥

हलवा पूरी लड्डू पेड़े,
प्रेम से भोग चढ़ाती हैं।
रत्न जवाहर मोहर चढ़ाई,
माला पुष्प पहनाती हैं॥

धीरे-धीरे रुक्मणी कहती,
मैं अम्बिका तुझे ध्याती हूं।
सन्तान तेरी और तुझको माता,
मैं प्रणाम बुलाती हूं॥

हे मेरी माता पार्वती जी!
मैं भिक्षा तुम से चाहती हूं।
पति मेरा बस कृष्ण जी होवे,
वरदान यही मैं चाहती हूं॥
करो सहायता माता दुर्गा,
मैं शरण तुम्हारी आती हूं।
छज्जूरामा कृष्ण ध्यावो,
कृष्ण ही वर मैं चाहती हूं॥
प्रेम विधि से पूजन कर के,
रुक्मणी बाहर आती है।
संग सहेलियां दासियां ले कर,
मन्दिर से वह जाती है॥
सैंकड़ों नारियां रुक्मणी संग में,
आगे रुक्मणी जाती है।
छम-छम करती रुक्मणी चलती,
धीरे पैर उठाती है॥
रुक्मणी देखी राजों ने है,
सारे मोहित हो जाते हैं।
रक्षक जोधे सिपाही सारे,
प्रेम मगन हो जाते हैं॥

तैयारी रखना सारी सेना,
रुक्म जो यह फरमाते हैं।
रुक्मणी पास कृष्ण न आवे,
सब को ही समझाते हैं॥

रुक्मणी चलती धीरे-धीरे,
घूंघट जरा उठाती है।
नाखुन अंगूठे से पकड़ा घूंघट,
राजों की ओर लयाती है॥

देख के रानी कृष्ण कन्हैया,
तेज कदम बढ़ जाती है।
रुक्मणी जी ने भुजा उठाई,
रथ पर चढ़ना चाहती है॥

देख के रुक्मणी हाथ को ऊंचा,
कृष्ण जो भाग के आते हैं।
दोनों हाथ से रुक्मणी पकड़ी,
रथ पर उसे चढ़ाते हैं॥

छाल मार के कृष्ण जी चढ़ गये,
घोड़ों को चाबुक देते हैं।
सैंकड़ों राजे खड़े वहां पर,
निकाल के रथ ले जाते हैं॥

जैसे सियारों का झुण्ड जहां हो,
शेर वहां पर आता है।
सिंह उठावे शिकार है अपना,
बेडर हो ले जाता है॥

ऐसे हो श्री कृष्ण कन्हैया,
अकेला हो वहां आता है।
छज्जूरामा रुक्मणी लेकर,
निर्भय होकर चला जाता है॥

दुनियां देखे खड़ो तमाशा,
कृष्ण की जय बुलाते हैं।
रुक्मणी योग कृष्ण ही वर है,
सारे यही सुनाते हैं॥

नर-नारी हैं सारे कहते,
कृष्ण बड़ा फुर्तीला है।
ले गया रुक्मणी आंख के झपके,
पैर न कीना गोला है॥

अकेला ही श्री कृष्ण था आया,
न कोई साथ वसीला है।
देखते सारे राजे रह गये,
कृष्ण दिखाई लीला है॥

छज्जूरामा कृष्ण कन्हैया,
बांका वली सजीला है।
शिशुपाल खड़ा है कंगना बांधे,
हाय ! चलता न कोई हीला है॥

●●●

* राजाओं से श्रीकृष्ण जी की लड़ाई *

शाल्व जरासंध पौंडर राजे,
महाबली कहलाते हैं।
रुक्मणी लेकर कृष्ण है भागा,
लज्जा बहुत ही खाते हैं॥

सारे चढ़ गये रथों पे अपने,
पीछा कृष्ण कराते हैं।
सेना फिर गई चार चुफेरे,
कृष्ण को घेरा पाते हैं॥

ढका कृष्ण का रथ है सेना,
शत्रु वार चलाते हैं।
कृष्ण न ज़िंदा जाने पावे,
सारे शोर मचाते हैं॥

डर गई रुक्मणी काल-चुफेरे,
कृष्ण उसे समझाते हैं।
मत घबरावो रुक्मणी प्यारो,
हम तीर कमान उठाते हैं॥

●●●

रुक्मणी ब्याह में कृष्ण गया,
बलराम खबर जब पाई है।
कृष्ण उठावे रुक्मणी जी को,
पूरी बात सुनाई है॥
भ्राता स्नेह में व्याकुल होकर,
सेना सब मंगाई है।
हाथी घोड़े रथ और पैदल,
चतुरंगी सेना चढ़ाई है॥
पहुंच गये हैं कुन्दनपुर में,
खबर वहां पर पाई है।
श्रीकृष्ण उठाई रुक्मणी जी,
हो रही वहां लड़ाई है॥
कृष्ण का रथ है घेरे भीतर,
बलराम खबर जब पाई है।
शत्रु सेना मार-मार के,
पूले की तरह बिछाई है॥

बलराम भ्राता बड़ा बहादुर,
हल मूशल वर्षाते हैं।
सवा घड़ो में शत्रु सेना,
दल को मार गिराते हैं॥
उधर कृष्ण जी तीर चलाते,
तीरों का मींह बरसाते हैं।
भुजा किसी की उड़े गगन में,
किसी का शोश उड़ाते हैं॥
किसी की छाती बेधन करके,
तीर पार हो जाते हैं।
जो भी शत्रु सन्मुख आता,
स्वर्गपुरी पहुंचाते हैं॥
सैंकड़ों गज और घोड़े मारे,
सीसों के ढेर लग जाते हैं।
पगड़ी समेत सीस कटें हैं,
रथ चूर्ण बन जाते हैं॥
खून की नदियां बह निकली हैं,
सीस कटाकट आते हैं।
बड़े बहादुर राम कृष्ण जी,
लाशों के ढेर लगाते हैं॥

भाग गई है बाकी सेना,
जिधर को रस्ता पाते हैं।
शिशुपाल जरासंध पौंडर राजे,
भाग के जान बचाते हैं॥
रुक्मणी जी भी बड़ी खुशी हैं,
फूली नहीं समाती हैं।
महाबली हो प्राण प्यारे,
चरणों हाथ लगाती है॥

●●●

शिशुपाल है स्त्री हार के भागा,
शर्म बहुत ही खाता है।
भागे राजे हुए इकत्र,
जरासंध उन्हें समझाता है॥
शर्म न हम को करनी चाहिये,
चक्र में भाग्य हमारा है।
कृष्ण ग्वाले का भाग चढ़ा है,
अभिमान हुआ उसे भारा है॥
पुरुष को सोच न करनी चाहिये,
जीता है चाहे हारा है।
कृष्ण का भाग है चढ़ा गगन में,
दैव ने हम को मारा है॥

सत्तरह बार मैं सेना लेकर,
मथुरा पर करी चढ़ाई थी।
कृष्ण ने मुझ को पकड़ के छोड़ा,
दैव ने हार दिलाई थी॥

अठारवीं बार में थोड़ी सेना,
पूर्ण विजय मैं पाई थी।
बलराम-कृष्ण ने छोड़ी मथुरा,
भाग के जान बचाई थी॥

जब भाग्य हमारा उदय होगा,
हम भी विजय को पायेंगे।
कर सकते क्या बलराम कृष्ण,
हम पल में मार गिरायेंगे॥

●●●

* रुक्म की श्रीकृष्ण से लड़ाई *

रुक्म कहे है क्रोधित होके,
मैं कृष्ण का गौरव तोड़ूंगा।
रुक्मणी बहिन छुड़ा कर लाऊं,
सीस कृष्ण का फोड़ूंगा॥

यदि प्रण मेरा न पूर्ण हुआ,
मुंह न तुम्हें दिखाऊंगा।
कुन्दनपुर में कभी न जाऊ,
जल कर मैं मर जाऊंगा॥

एक अक्षौणी सेना लीनी,
जोश रुक्म को भारा है।
रथ पर चढ़ गया शस्त्र लेकर,
कृष्ण को जा ललकारा है॥

हाथ मिलाकर छलिये जाना,
आ गया काल तुम्हारा है।
बहिन मेरी को छोड़ के भागो,
यदि जीवन तुझ को प्यारा है॥

कृष्ण कहे तुम वार चलावो,
मैं देखना तुम को चाहता हूं।
कैसा बली है रुक्म महाराजा,
बल तेरा आजमाता हूं॥

राजा रुक्म जी क्रोध में आकर,
कृष्ण पे तीर चलाता है।
तीरों पर है तीर चलाता,
तीरों का मींह बरसाता है॥

कृष्ण जी ने सब तीर हैं काटे,
रुक्म ने जो चलाये हैं।
रुक्म ठहरो मेरा तोर है आता,
कृष्ण जी फिर फरमाये हैं॥

पहला तीर कृष्ण जी छोड़ा,
धनुष को काट गिराया है।
घोड़े मारे रथ ध्वजा उड़ा दी,
सारथी मार गिराया है॥

रुक्म है सारा जोर लगाता,
दूसरा धनुष उठाया है।
पल न कृष्ण जो एक लगाई,
वह भी काट गिराया है॥

पांच धनुष हैं रुक्म के काटे,
चूर्ण रथ करवाया है।
एक तीर न कृष्ण ने खाया,
रुक्म बहुत घबराया है॥

क्रोध में आकर राजा रुक्म ने,
नग्न कटार उठाई है।
बर्छी फैंकी कृष्ण के ऊपर,
रथ से छलांग लगाई है॥

क्रोध में आये कृष्ण कन्हैया,
रुक्म गले से पकड़ा है।
तलवार उठाई रुक्म को मारूं,
एक हाथ में जकड़ा है॥
रानी रुक्मणी रथ से कूदी,
कृष्ण को अर्ज सुनाती है।
भाई मेरे को प्रभु न मारो,
चरणों में गिर जाती है॥
रुक्म की बख्शी जान कृष्ण ने,
रथ पीछे बंधवाया है।
उसकी मूछें दाड़ी मून्डी,
उसको कुरूप बनाया है॥
मार के सैना सारो रुक्म को,
बलराम वहां पर आया है।
योग नहीं जो साला बांधा,
कृष्ण को कथन सुनाया है॥
कुरूप भी करना उचित नहीं था,
रुक्म को फिर छुड़वाया है।
इसे सम्बन्धी अपना समझो,
कृष्ण जी को समझाया है॥

●●●

* रुक्मणी संग द्वारका आना *

बलराम भ्राता बड़ा खुशी है,
द्वारकापुरी में आते हैं।
चतुरंगिणी सेना पीछे-पीछे,
डंका फतेह बजाते हैं॥
कृष्ण का रथ है पीछे आता,
रुक्मणी साथ बिठाते हैं।
बलराम जी ने आ सूचना दीनो,
सारे खुशो मनाते हैं॥
उगरसेन जो बड़ी खुशी में,
सारा नगर सजाते हैं।
साफ़ कराई गलियां सड़कां,
छिड़काव वहां करवाते हैं॥
देवकी वसुदेव बड़े खुशी हैं,
फूले नहीं समाते हैं।
यादव वंशो सब नर-नारी,
भागे-भागे आते हैं॥
बड़े प्रेम से रुक्मणी उतारी,
सारे शगुन मनाते हैं।
देख के रुक्मणी सुन्दरी देवी,
कृष्ण की उपमा गाते हैं॥

राजा और वसुदेव देवकी,
पण्डितों को बुलवाते हैं।
शोध के देखो शुभ विवाह को,
शुभ लगन कढवाते हैं॥
सखा सम्बन्धी भीष्मक राजा,
द्वारिकापुरी में आते हैं।
पूर्ण विधि से विवाह है कीना,
दान पुण्य करवाते हैं॥
युग-युग जिए जोड़ी इनकी,
सारे आशीष सुनाते हैं।
नगर की नारां मंगल गावें,
रुक्मणी हरण को गाते हैं॥
छज्जूरामा जो नर-नारी,
रुक्मणी हरण को गायेगा।
कामना पूरी कृष्ण सहायक,
भगवान् का दर्शन पायेगा॥

तीन बातें

तीन को प्रणाम करो — माता, पिता, गुरु
तीन के लिये लड़ो — आज़ादी, ईमानदारी, इन्साफ़
तीन से दूर रहो — सुस्ती, बकवास, खुशामद
तीन से अच्छा सलूक करो — नौकर, ग़रीब, बुजुर्ग
तीन पर कब्ज़ा करो — ज़ुबान, आदत, गुस्सा
तीन से मखौल मत करो — अङ्गहीन, विधवा, अनाथ
तीन बातें मत भूलो — उपकार, उद्देश्य, उदारता
तीन चीजें एक बार ही मिलती हैं — मां की ममता, जवानी, सुन्दरता
तीन चीजें निकल कर लौटती नहीं — तीर कमान से, बुरा वचन ज़ुबान से, प्राण तन से
तीन बातों से बचो — अपनी उपमा से, दूसरे की बुराई से, हसद (ईर्ष्या) से
तीन के लिये मर मिटो — धर्म, देश, दोस्त
तीन के लिए तैयार रहो — दुःख, मौत, मुसीबत
मूर्ख कौन है ? — जो सुख में भगवान को भूल जाता है पर दुःख में गिड़गिड़ाता है
स्वर्ग क्या है ? — नेक कामों में दिल का लगाना
नर्क क्या है ? — बुराईयों की ओर मन को झुकाना।

—छज्जूराम सामाने वाला

स्वर्गीय पंडित छज्जूराम जी की रचनाएँ

निम्नलिखित सभी पुस्तकों में हरि की महिमा है और सभी कविता में लिखी हैं। भाषा ऐसी ही है जैसी इस पुस्तक की।

भगवद्गीता	[६०० श्लोक]	पंजाबी में छपी है
श्रीकृष्ण जन्म	[२०० श्लोक]	हिन्दी में छपी है
रुक्मणी विवाह	[२०० श्लोक]	,,
श्री रामायण	[२४०० श्लोक]	,,
श्री सुखमणी साहिब	[२३० श्लोक]	,,
भजनावली :	[३६५ श्लोक]	,,
भगवान को चिट्ठी	[८० श्लोक]	
श्रीकृष्णलीला	[३० श्लोक]	
ईश्वर महिमा	[२६० श्लोक]	
ईश्वर सत्संग	[२५० श्लोक]	
नाग लीला	[५५ श्लोक]	
श्रीमद्भागवत्	[८००० श्लोक]	,,
श्रीकृष्णोदय	[८०० श्लोक]	,,
बिना छपी :—		
श्री दमदमा साहिब	[२२५ श्लोक]	हिन्दी में
सुदामा भक्त	[८० श्लोक]	हिन्दी में

प्राप्ति स्थान :—

डॉ० एस० एस० शर्मा, ट्रस्टी,

पं० छज्जूराम मायावन्ती चैरीटेबल ट्रस्ट,

66, रेलवे मण्डी, होशयारपुर—146 001 *(भारत)*